कुल पृष्ठ संख्या—24 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या.... 1508939

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) -

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम — हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☐

विषय शनिवार हिन्दी

परीक्षा दिवस शनिवार

दिनांक 11-03-17

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

परीक्षक के ह

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तक के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवो

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

ाक्षर _____ संकेतांक

ीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 161/2017

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

1. (क) 'वस्तु के प्रति मनुष्य का दृष्टिकोण' इस गद्यांश का उचित शीर्षक है।

(ख) मनुष्य का हृदय बड़ा ममत्व प्रेमी है। उसका वस्तु के प्रति दृष्टिकोण अलग - अलग है। कैसी ही उपयोगी और कितनी ही सुंदर वस्तु क्यों न हो जबतक उसको पराई समझता है प्रेम नहीं करता है। मद्दी और बिलकुल काम न आने वाली को यदि अपना समझता है, तो उसे प्रेम करता है।

(ग) मनुष्य तब संतोष मिलता है जब वह पराई वस्तु से प्रेम कर उसे अपनाकर छोड़ता है अथवा अपने हृदय में विचार कर लेता है कि यह वस्तु मेरी है। तब उसे संतोष मिल जाता है।

(घ) जब मनुष्य पराई वस्तु को अपना नहीं समझता है चाहे वह पराई वस्तु कितनी भी मूल्यवान क्यों न हो, कितनी ही उपयोगी क्यूँ न हो, कितनी सुंदर क्यों न हो, उसके नष्ट होने पर मनुष्य कुछ भी दुःख का अनुभव नहीं करता है। क्योंकि वह पराई वस्तु होती है।

2. (क) 'पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले' इस काव्यांश का उचित शीर्षक है।

(ख) पैरों में पंख लगने से कवि का आशय है कि जब मनुष्य अपनी मंजिल तक पहुँचने के लिए कठिन परिश्रम करता है तब उसके पैरों में पंख लग जाते हैं फिर वह नहीं देखता है

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

कि आगे क्या कठनाईयाँ आयेगी। मनुष्य तो अपनी मंजिल पाने के लिए रास्ते पर चल पाता है। और उसके पैरों में पंख लग जाते है ऐसा वह महसूस करता है।

(ग) बाट (राह) की पहचान करना इसलिए जरुरी है क्योंकि दो रास्ते होते है एक सच्चाई और अच्छाई का, और दूसरा बुराई का रास्ता होता है। राहगीर को बाट की पहचान जरुरी क्योंकि पता नहीं वह सच्चे और अच्छे रास्ते पर चलेगा या गलत (बुराई) के रास्ते पर चलेगा। तो चलने से पहले उसे पहचान करना जरुरी है कि कौनसा रास्ता सच्चाई का है।

(घ) यदि हमारे मार्ग में काँटे आते है तो हमें यह सीख देते है कि सही रास्ते पर चलने के लिए हमें कठनाईयों का सामना करना पडेगा। यदि रास्ते में कठिनाईयाँ आती है तो हम जान जाते है कि हम सही रास्ते पर चल रहे है। काँटे भी एक असफलता की तरह ही है जो निरंतर चलने की सीख देते है।

7 (क) गोपियों ने श्रीकृष्ण को हारिल की लकडी इसलिए कहा क्योंकि जिस प्रकार एक हर हारिल पक्षी लकडी को अपनो पैरोंमें दिन-रात फँसाये रखता है और उसे ही अपने जीवन का आधार मानता है उसी प्रकार गोपियाँ भी श्रीकृष्ण को दिन-रात याद करती थी। उसे ही अपने जीवन का अवलम्ब मानती थी। गोपियाँ श्रीकृष्ण को

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

हारिल पक्षी के समान अपना एक जीने का आधार मानती थी। इसलिए गोपियों ने श्रीकृष्ण को 'हारिल पक्षी की लकड़ी' कहा।

(ग) मंगलेश डबराल की कविता 'संगतकार' में मुख्य गायक का साथ संगतकार देता है। ~~अपने~~ जब मुख्य गायक का स्वर चट्टान जैसा भारी स्वर हो जाता है तब संगतकार ही अपनी कोमल आवाज को मिलाकर भारीपन को कम करता है। जब ~~मुख्य गायक~~ अंतरे की जटिल तानों में खो चुका होता है तब संगतकार ही स्थाई को संभाले हुए रखता है। मुख्य के संगीत को खराब होने से रोकता है। इस प्रकार संगतकार ही कठिनाई में मुख्य गायक का साथ देता है।

(घ) राम - लक्ष्मण - परशुराम संवाद में लक्ष्मण ने योद्धा की विशेषता बताते हुए कहा कि योद्धा युद्ध में अपने कार्य से अपना परिचय देते हैं कोरी प्रशंसा नहीं करते हैं जो कायर होते हैं वो वीर योद्धा को देखते ही अपनी प्रशंसा करने लग जाते हैं। लक्ष्मण ने कहा कि शूरवीर कभी अपनी ~~प्र~~ स्वयं प्रशंसा नहीं करते बल्कि लोग उनकी प्रशंसा करते हैं।

9 (क) उपर्युक्त गद्यांश में सभ्यता के निम्नलिखित लक्षण बताये गए हैं :-

सभ्यता के लक्षण हैं हमारे खाने पीने के तरीके, हमारे ओढ़ने के पहनने के तरीके, हमारे गमनागमन के साधन ये सब हमारी सभ्यता

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

के ही लक्षण है।

(ख) संस्कृति का नाता कल्याण से है। मानव की जो योग्यता उससे कल्याण के साधनों का आविष्कार कराती है उसे ही हम संस्कृति कहते है। यदि आविष्कार का नाता कल्याण से टूट जाये तो वह असंस्कृति होकर रह जायेगी।

8. (क) जग-मंदिर-सुंदर में रूपक अलंकार है।

(ख) 'श्रीकृष्ण' को ब्रज दूल्हे इसलिए कहा है क्योंकि उन्होने पैरों में पाँयल पहने हुए, कमर पर करधनी, पीले वस्त्र और मुकुट पहने हुए है। उनका यह राजसी श्रृंगार एकदम दूल्हे जैसा प्रतीत हो रहा है इसलिए कवि ने श्रीकृष्ण का बाल रूप का राजसी श्रृंगार में प्रस्तुत कर उसे ब्रज दूल्हे कहा है।

(ग) श्रीकृष्ण का रूप इस प्रकार है:- श्रीकृष्ण के पैरों में पायल मधुर बज रही है, कमर पर करधनी की ध्वनि मधुर लग रही है। साँवले अंग पर पीले वस्त्र अत्यंत सुशोभित हो रहे है। जो हृदय पर वनमाला वह मन को भा रही है। बड़े-बड़े दो चंचल नयन है और सीर सिर पर मुकुट धारण कर रखा है उनकी मंद हंसी मुख रूपी चन्द्रमा की चांदनी लग रही है

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

यह उनका जो रूप है मन को सम्मोहित कर रहा है।

(घ) 'किरीट' का अर्थ 'मुकुट' है

5. (क) वाक्य में अकर्मक क्रिया है। यहाँ 'उड़ना' क्रिया का फल सीधा कर्ता पर पड़ रहा है।

अकर्मक क्रिया :- जहाँ वाक्य में क्रिया का फल कर्म पर न पड़कर कर्ता पर पड़ता हो वहाँ अकर्मक क्रिया होती है। अकर्मक क्रिया में कर्म की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

(ख) दुर्गा - स्त्रीलिंग, एकवचन, व्यक्ति - वाचक संज्ञा।

विदुषी - गुणवाचक विशेषण, स्त्रीलिंग एकवचन।

(ग) संयुक्त वाक्य :- जहाँ वाक्य में दो या दो से अधिक साधारण वाक्य अथवा स्वतंत्र उपवाक्य हो, वहाँ वे उपवाक्य योजक शब्द (जैसे किन्तु, परन्तु, और, वा, अथवा) से जुड़े वहाँ संयुक्त वाक्य होता है।

जैसे :- राम पढ़ रहा है और सीता सो रही है

इस वाक्य 'राम पढ़ रहा है' यह एक स्वतंत्र उपवाक्य है अ सीता सो रही है यह एक स्वतंत्र उपवाक्य है। ये दोनो उपवाक्य योजक शब्द और से जुड़े है। अतः यहाँ

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

संयुक्त वाक्य है।

(घ) रंग जमना - वर्चस्व रखना या धाक जमना।

वाक्य :- रामकिशोर के मंत्री बनते ही उसने पूरे जिले पर अपना रंग जमा दिया।

(ङ) राहुल आठवी पास तो है दिखावा ऐसे करता है जैसे ए बी० ए० कर रखी हो। इसी कहते है 'अधजल गगरी छलकत जाए'। मतलब ओछा व्यक्ति अधिक दिखावा करता है।

(च) इस पंक्ति में उपमा अलंकार है। उपमा अलंकार कहता है। जाकि समता दीजिए ताहि उपमेय प्रभाव, जाको वर्णन कीजिए. ताहि कहत उपमान। अर्थात दो वस्तुओं अत्यधिक समानता होने के तुलना की जाए वहाँ उपमा अलंकार होता है। जैसे :- हो गई पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए।

इस वाक्य में पीडा पर्वत के समान बताया है। यहाँ 'सी' वाचक शब्द आया है। उपर्युक्त पंक्ति में सम वाचक शब्द आया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

19. (क) बालगोबिन भगत की तीन चारित्रिक विशेषताएं निम्न लिखत है :-

1. साधा जीवन :- बालगोबिन भगत साधा जीवन और उच्च विचार रखते थे। वे किसी से झगड़ा मोल नहीं लेते थे। बिना पूछे किसी भी चीज को व्यवहार में नहीं लाते थे।

2. ईश्वर में आस्था :- बालगोबिन ईश्वर में आस्था रखते थे। वे अपना जीवन ईश्वर की सेवा में समर्पित कर चुके थे। वे अपने आप को ईश्वर का बन्दा मानते थे।

3. रूढ़ीवादी विचारों में विश्वास नहीं रखते थे :- बालगोबिन भगत रूढ़ीवादी विचारों में विश्वास नहीं रखते थे। उन्होंने अपनी पुत्र अपनी पतोहू से ही अग्नि दिलवाई और दूसरी शादी के लिए आदेश दे दिया।

(ख) फादर कामिल बुल्के संकल्प से सन्यासी थे। फादर कामिल बुल्के पारंपरिक रूप में साधु नहीं थे। वे सिर्फ संकल्प से सन्यासी थे। एक बार जो संकल्प कर लिया उसे पूरा करते थे। सन्यास लेने के दौरान उन्होंने यह शर्त रखी कि वे भारत जायेंगे। यही उनका संकल्प हमेशा के लिए बना रहा था फिर वो भारत में रहे। उन्होंने साधु बनने का संकल्प लिया और हमेशा साधु ही बने रहे। वे किसी से रिश्ता बनाते तो तोड़ते नहीं थे। यही उनकी विशेषता थी जिसके कारण वे साधु कहलाए।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(घ) शहनाई वादक बिस्मिल्ला खाँ का जन्म डुमराव बिहार के संगीत प्रेमी परिवार में हुआ। उन्होने अपना सारा जीवन शहनाई के स्वर सुधारने में ही व्यतीत किया। उन्होने ईश्वर पर बहुत आस्था रखी। ईश्वर से हमारे एक सच्चे स्वर की माँग करते थे। उन्होने अपना जीवन साधारण तरीके से बिताया। जीवन सबसे सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' भी प्राप्त किया फिर उन्हे किसी प्रकार खुद के अभिमान नहीं हुआ।

11.] (क) हिंदी के विकास मे महावीर प्रसाद द्विवेदी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है उन्होने कई रचनाऐं लिखी है उन्होने स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खण्डन जोरदार तर्क देकर किया है। महावीर प्रसाद जी ने अनेक रचानऐं रचकर जैसे:- महिला कुमोदिनी आदि रचानएँ की है और इसी हिंदी भाषा का गौरव बढाया है। उन्होने महिला की शिक्षा के बारे मे दूर-दृष्टि रखी है। महिला के विकास मे उन्होने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

(ख) 'लखनवी अंदाज' कहानी की संवेदना यह है कि लेखक ने यह सारा सुर एक नवाबी पर जोर देकर लिखा है। लेखक ने लखनवी अंदाज में

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

सामन्ती पतनशील लोगों पर व्यंग्य किया है और कहा कि जब बिना खीरे खाये सिर्फ सूंघने से ही पेट भरने की डकार आ सकती है तो फिर बिना पात्रो, विचार, घटना के नई कहानी क्यों नहीं लिखी जा सकती है। लेखक यह सब नवाबी को दशा को देखकर कि कहा है।

12. 'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ में लेखक अज्ञेय ने लिखने के निम्न कारण बताते हुए कहा है कि मैं वह इसलिए लिखता है क्योंकि वह स्वयं जानना चाहता है कि वह क्यों लिखता है। लेखक कहता है कि बिना लिखे इस प्रश्न का उत्तर नहीं मिल सकता है। कवि बताता है वह इसलिए लिखता है क्योंकि वह लिखकर अपनी आंतरिक विवशता को जान पाता है और उसे आंतरिक विवशता से मुक्त हो पाता है। लेखक कहता है आत्मिक अनुभूति और आन्तरिक संवेदना मुझे लिखने को प्रेरित करती है। लेखक कहता है कि बिना लिखे वह चैन से नहीं बैठ पाता है और उसके मन आकुलआहट बनी रहती है लेखक बताता है कि मैं वह अनुभव के आधार कोई भी लेख नहीं लिखता हूँ लेखक कहता है कि और लेखक संपादक के आग्रह से, प्रकाशक के तकाजे, आर्थिक आवश्यकता के कारण लिखते है और उसी को अपना सहारा बनाते है। लेखक कहता है कि मैं वह इन चीजों को सहारा भी नहीं बनाता है और बाधा

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

भी नहीं मानता है। लेखक के लिखने मुख्य कारण आन्तरिक अनुभूति जो कृति करने के लिए मजबूर कर देती है। और लिखकर वह उससे मुक्त हो जाता है। लेखक ने 'हिरोशिमा की कविता' भी आन्तरिक संवेदना के ही कारण लिखी।

13. (क) जॉर्ज पंचम की नाक वापस लाने के लिए मूर्तिकार ने निम्न प्रयास किये :-

1. पहला उसने भारत के सभी पहाड़ो पर जाकर उस किस्म का पत्थर ढूंढने की कोशिश की जिसकी लाट बनी हुई थी।

2. उसने देशभक्तों की नाक को भी परंतु देशभक्तो और बाल शहीदों की नाक जॉर्ज पंचम नाक से बड़ी थी

3. अंत मे उसने जिंदा लगाने की बात कही और जिंदा नाक मूर्ति की लाट पर लगा दी।

(ख) (ग) दुलारी का हुन्नु के प्रति पवित्र प्रेम था। जब हुन्नु खद्दर की साड़ी उसके लिए लाया था जब दुलारी जान गयी थी हुन्नु उससे बल्कि उसकी कला से प्रेम करता है। दुलारी उससे आत्मिक प्रेम रखती थी। जब हुन्नु के

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

मरने की खबर सुनती है तो वह स्तब्ध रह जाती है वह बिना पड़ोसिनों को देखते हुए रोने लग जाती है। फिर वह खद्दर की साड़ी पहनकर अमन सभा में गाती है बिना किसी को देखते हुए। एही ठैयाँ झूलनी हे रानी हे रामा। बिना किसी को देख हुए। वह टुन्नु से सच्चा प्रेम करती थी। तब तभी तो उनका प्रेम देश प्रेम परिणत हो जाता है।

(घ) "माता का आँचल" पाठ में बालक भोलानाथ व बाबूजी के मित्रवत प्रेम के साथ वात्सल्य भी प्रकट होता है। जब सुबह उसके पिताजी उसको उठाते और नहलाते - धुलाते थे। अपने साथ ही भोजन कराते थे और जब मछलियों को गोलियाँ खिलाने के बाद वे झुकी हुई डालियों पर झूला झूलाते थे इससे उनका वात्सल्य प्रेम झलकता है।

जब सब बच्चे खेल खेलते रहते तो वो भी उनके खेल में सामिल हो जाया करते थे। कुश्ती के समय खुद हारकर उसका मनो - बल बढ़ाया करते थे। इससे उनका मित्रवत प्रेम प्रकट होता है।

(क) गाड़ी चलाने के लिए लाइसेंस & ड्राईविंग लाईसेंस, गाड़ी सम्बन्धि हेतु रेजिस्ट्रेशन कागजात, प्रदूषण नापने की मशीन, इन्सलेटर और जरूरी कागजात होने चाहिए।

[14]

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

गाड़ी पर की प्लेट पर नम्बर होना चाहिए और कम्पनी का नाम भी होना चाहिए। सड़क - सुरक्षा सम्बन्धित सभी जानकारियाँ होनी चाहिए।

(ख) शराब पीकर गाड़ी इसलिए नहीं चलानी चाहिए क्योंकि यह हमारे मानसिक संतुलन को बिगाड़ती है। दृष्टि को भी बाधित करती है। नियंत्रण और समन्वय को भी बाधित करती है जिससे दुर्घटना होने की संभावना बनी रहती है इससे चलाने वाले नहीं बल्कि ये सड़क पर चलने वालों की हानि की संभावना रहती है। दुर्घटना होने सार्वजनिक सम्पति का नुकसान होता है और जान भी जा सकती है।

3.] * 1. स्वच्छता क्या है :- स्वच्छता का मतलब सिर्फ साफ - सफाई से सम्बन्धित न होकर इस बात से ज्यादा संबंध रखता है कि वस्तुओं उनके व्यवस्थित ढंग में रखना ही स्वच्छता कहलाती है। स्वच्छता का केवल मतलब साफ-सफाई से न होकर इससे भी सम्बन्ध रखता है कि पेयजल स्वच्छ हो। स्वच्छता का मतलब लोग बाहर शौच के लिए न जाये बल्कि शौचालय का ही प्रयोग करे। स्वच्छता का नाता स्वस्थ से भी है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

इसका का मुख्य उद्देश्य इस बात से है कि हम चारों ओर स्वच्छता बनाये रखे और आने वाली बिमारियों की रोकथाम करे। स्वच्छता का कतबा दिन - बे - दिन घटता जा रहा है। चारों ओर गंदगी ही दिखाई देने लगी है। चाहे बस हो, या रेलगाड़ी हो या कोई कोना हो हर जगह गंदगी ही दिखाई देती है स्वच्छता से ही हमारा देश विकसित हो सकता है। स्वच्छता से ही प्रति आय बढ़ सकती है।

* 2. स्वच्छता के प्रकार :- स्वच्छता के प्रकार है :-

शारीरिक स्वच्छता :- सब जैसा कि कहा हि गया कि 'पहला सुख निरोगी काया' है हमारी काया तो जब स्वच्छ रहेगी तब हम खुद स्वस्थ स्वच्छ रहेंगे इसलिए सबसे हमारे तन की स्वच्छता जरूरी है

2. पर्यावरिक स्वच्छता :- अक्सर देखा जाता है कि हम हमारे घर की सफाई तो कर लेते है। परंतु कूड़ा - करकट बाहर फेंक ही देते है। हमें इस बात से जाग - रूक रहना चाहिए कि सारी बिमारियों तो पर्यावरिक गंदगी से ही फैलती है।

3. मानसिक स्वच्छता :- हमें हमारे मन को भी स्वच्छ रखना चाहिए। यदि

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

हम अच्छे विचार रखेंगे तो तभी स्वच्छता बनी रहेगी।

* 3. स्वच्छता के लाभ :- स्वच्छता के निम्न लिखित लाभ है।-

1. एक सर्वे के अनुसार पाया गया है। कि जितना एक गरीब व्यक्ति प्रति माह नहीं कमाता है उससे ज्यादा तो वह अपनी बिमारी में लगा देता है यदि स्वच्छता बनी रहेगी तो कोई बिमार नहीं होगी और गरीब व्यक्ति की आय भी बढ़ेगी।

2. जितना हम हमारे पर्यावरण और घर को स्वच्छ रखेंगे उतना ही हमारा मन खुश होगा।

3. हम स्वच्छ जल पीकर और शौचालय का उपयोग कर दिन - बे - दिन बढ़ती गंदगी से निजात पा सकते है।

4. दिन - बे - दिन जनसंख्या बढ़ रही है और जनसंख्या बढ़ने से गंदगी भी बढ़ती जा रही है। यदि हम स्वच्छ रहेंगे तो नागरिकों रहने में कोई परेशानी नहीं आयेगी।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

5. स्वच्छता :- हमारा योगदान :- गांधीजी ने कहा था कि यदि तुम दुनिया को बदलना चाहते हो तो पहले स्वयं को बदलो। स्वच्छता की शुरुआत पहले हमे हमारे घर से शुरु करनी होगी। फिर हम पडोस वालों को स्वच्छता होने वाले लाभों और गंदगी से होने वाली हानियों से जागरुक कर स्वच्छता पर जोर देंगे।

इस देश को स्वच्छ करने के लिए हम महत्वपूर्ण कदम उठायेंगे :-

1. हम कमेठी का गठन लोगों को जागरुक करेंगे।

2. हर रविवार को हमारे आस-पास फैली गंदगी की सफाई करेंगे

3. लोगों को जागरुक बनाकर शुद्ध पेयजल और शौचालय का उपयोग करने की सलाह देंगे।

4. एक अभियान के तहत इस स्वच्छ-ता को सबसे पहले गाँवों से जोडेंगे।

5. गाँव वालों को गंदगी से होने वाली हानियों की जानकारी देंगे।

इस देश को स्वच्छ करने के लिए जो कुछ कर सकते है वो सब कुछ करेंगे।

उपसंहार :- जैसा कि हम सभी को विदित है प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

मोदी ने 'स्वच्छ भारत अभियान' गांधीजी के स्वच्छ भारत के सपने को साकार करने के लिए गांधी जयंती के उपलक्ष्य पर यह अभियान चलाया है। हमें भी स्वच्छता पर ध्यान देना चाहिए। हर कोई चाहता है कि हम स्वस्थ रहे पर स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छ रहना जरूरी है। स्वास्थ्य का नाता स्वच्छता से जुड़ा हुआ है। इसलिए हमें स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छता रखनी ही होगी। जब हमारे प्रधानमंत्री ये कार्य कर सकते है तो फिर हम यह कार्य में क्यूँ झिझक रहे है? हम झूठी दिखावट से दूर रहकर सफाई करनी चाहिए दिखावट के लिए तो हमारे नेता ही खूब करते है। तो आओ सब मिलकर यह स्वच्छ अभियान को पूरा करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करे। एक कदम स्वच्छता की ओर। आने वाला जमाना खुश-हाल होगा।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

4.] सेवा में,

श्रीमान जिला शिक्षा अधिकारी,
जिला शिक्षा विभाग,
अलवर राजस्थान।

विषय:- विद्यालय में रिक्त पदों पर को भरने के क्रम में।

मान्यवर,

उपर्युक्त विषय में निवेदन है कि मैं गजपुर निवासी विजेता मीना राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में पढ़ती हूँ पर यहाँ अंग्रेजी गणित, और विज्ञान के शिक्षकों के पद रिक्त है। हमारी पढ़ाई भी सुचारु रूप से न होने के कारण हम इन तीन विषयों में बिलकुल कमजोर है। हमारी वार्षिक परीक्षाएँ भी समीप आने लगी है। शिक्षकों के पद पूरे न होने से कई विद्यार्थी स्कूल भी नहीं आते है।

श्रीमान जी हम इस स्कूल में पढ़कर इस गाँव और जिले का नाम रोशन करना चाहते है परंतु श्रीमान जी शिक्षक न होने के कारण करने में समर्थ नहीं है। इसलिए श्रीमान जितना शीघ्र हो सके उतनी जल्दी इन रिक्त पदों को भर दीजियेगा। हम समझते है कि आप हमारी विवशता को समझते हुए जल्दी इन पदों को पूरा करेंगे।

आपकी अति कृपा होगी।

सधन्यावद।

दिनांक:- 011-03-17

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

आपकी छात्रा,
विजेता मीना।

6. (क) गोपियों ने उद्धव को बड़भागी इसलिए कहा है कि उन्होंने उसने श्रीकृष्ण के पास रहते हुए भी श्रीकृष्ण से प्रेम नहीं किया ना ही प्रेम की विरह - वेदना को जाना। उद्धव प्रेम के दर्द से बच गये थे जिसे गोपियाँ सह रही थी। गोपियों को अप्रत्यक्ष में यह समझाया है कि तुम दुनिया के सबसे बड़े अभागे हो जो तुमने प्रेम नहीं किया।

(ख) प्रीति - नदी मे पाउँ न बोर्‌यो के माध्यम से गोपियाँ उद्धव से कह रही है कि तुमने अपने ज्ञान के घमण्ड में प्रेम रूपी नदी में पाँव नहीं डुबोया है अर्थात तुम श्रीकृष्ण के पास तो रहते हो लेकिन तुम उनसे प्रेम नहीं करते हो। तुम्हें तुम्हें अपने ज्ञान पर घमंड है। इसलिए तुमने ऐसा किया है नहीं तो तुम प्रेम कर बैठते।

समाप्त

कार्य